पेंगुइन आ रही हैं!

आर. एल. पेनी, चित्र : टॉम ईटन

पेंगुइन आ रही हैं!

आर. एल. पेनी, चित्र : टॉम ईटन

पेंगुइन पक्षी होते हैं.

उनके पंख होते हैं और वे अंडे देते हैं.

उनके पंख, फर की तरह दिखते हैं
क्योंकि वे बहुते छोटे होते हैं
और बहुत पास-पास होते हैं.

जब वे समुद्र में तैरते हैं
तो पंख पेंगुइन को गर्म और सूखा रखते हैं.

पेंगुइन अठारह प्रकार के होते हैं.

मैं एडेली पेंगुइन के बारे में जानना चाहता था,
इसलिए मैं अंटार्कटिका गया.

मैंने दक्षिण की ओर जाते हुए
एक बड़े जहाज पर यात्रा की.

हमें पैक-आइस के माध्यम से गुज़ारना था.

पैक-आइस, अंटार्कटिका के चारों
ओर तैरती हुई बर्फ का नाम है.

प्रत्येक वसंत में एडेली पेंगुइन
पैक-आइस को छोड़ते हैं.

वे अंटार्कटिक तट पर संभोग करने
और अंडे देने के लिए आते हैं.

पेंगुइन वहां इकट्ठा होते हैं जहां कई पत्थर हों.

वहीँ पर वे अपने घोंसलें बनाते हैं.

इन्हें "रूकरी" कहा जाता है.

वे अपने घोंसले बनाने के लिए
छोटे पत्थरों का उपयोग करते हैं.

वो शोर किसका था?

वो आवाज़ "आर्क" जैसी लगती थी.

वो पेंगुइन की ही आवाज़ होनी चाहिए!

फिर मैं किनारे की ओर दौड़ा.

मुझे पत्थरों के ढेरों वाला एक चट्टानी तट दिखा.

यह ज़रूर एक "रूकरी" होनी चाहिए!

जानवरों के बारे में जानने का
सबसे अच्छा तरीका उनके साथ रहना होता है.

मैंने स्लेज पर एक घर बनाया.

मैं उसे "रूकरी" के पास ले गया.

फिर मैंने इंतजार किया.

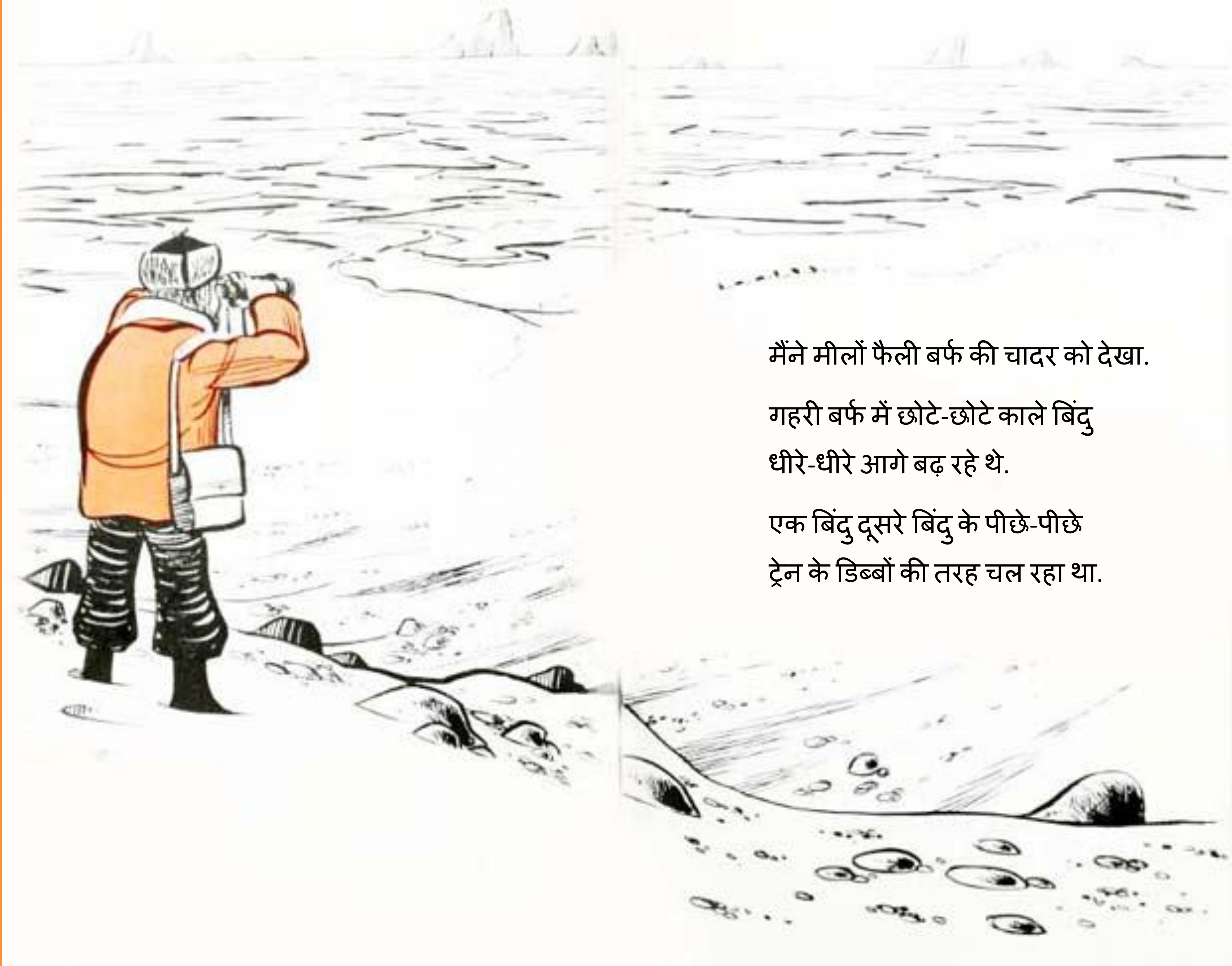

मैंने मीलों फैली बर्फ की चादर को देखा.

गहरी बर्फ में छोटे-छोटे काले बिंदु
धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे.

एक बिंदु दूसरे बिंदु के पीछे-पीछे
ट्रेन के डिब्बों की तरह चल रहा था.

एडेली पेंगुइन केवल चौदह इंच ऊंचे होते हैं.

उनका वजन लगभग चौदह पाउंड (7-किलो) होता है.

उनका भार एक नवजात मानव बच्चे से दोगुना होता है.

बर्फ दस इंच गहरी है.

पेंगुइन्स को गहरी बर्फ में चलने में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है.

जब पहला पेंगुइन थक जाता है, तो दूसरा पेंगुइन उनका नेतृत्व करता है.

क्या मैं बर्फ में उनकी कुछ मदद कर सकता हूँ?

मैं उनके पास जाता हूं.

वे लगभग बीस फीट दूर रुकते हैं
और आवाज़ करते हैं "आर्क".

मैं घूमकर अपने पैरों से एक पथ बनाता हूं.

पेंगुइन मेरे पीछे-पीछे चलते हैं.

हम एक ट्रेन की तरह चलते हैं.

सिर्फ मनोरंजन के लिए,
मैं उन्हें एक बड़े गोले में घुमाता हूं.

वे फिर से मेरा पीछा करते हैं.

मैं किनारे पर जाता हूँ.

पेंगुइन की छोटी ट्रेन
फिर चट्टानी किनारे पर आती है.

वे एक-दूसरे के दोस्त लगते हैं.

लेकिन पत्थरों के ढेर पर आने के बाद,

वे एक-दूसरे से दूर चले जाते हैं.

वे अब इतने मिलनसार नहीं हैं.

हर कोई अलग-अलग जगह पर जाता है.

वे अपना सिर आसमान की ओर उठाते हैं.

वे जोर से "आआआआआह" चिल्लाते हैं.

इसमें कई पेंगुइन शामिल होते हैं.

प्रत्येक पेंगुइन "रूकरी" में अपने विशेष
स्थान पर खड़ा होता है.

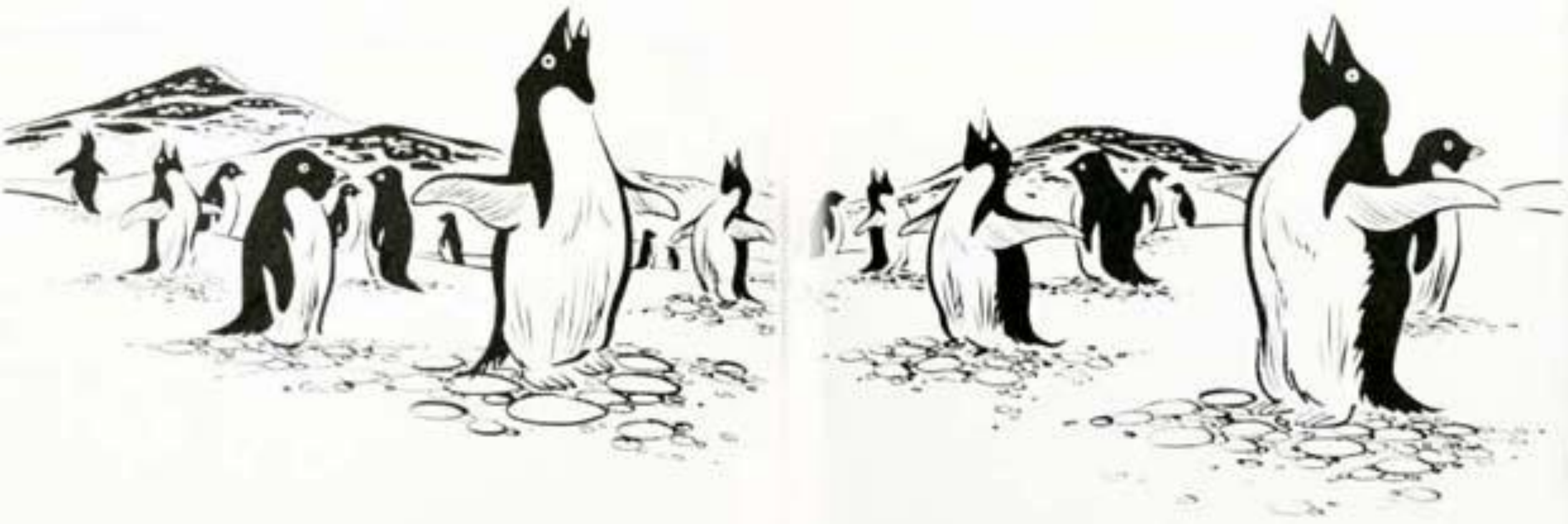

पत्थरों के बड़े-बड़े ढेरों पर हर दिन और पेंगुइन आते हैं.

वहां अब सैकड़ों पेंगुइन हैं. वे सभी एक-जैसे दिखते हैं.

मैं उन्हें अलग-अलग नहीं बता सकता हूँ.

मैं प्रत्येक पक्षी पर "नंबर" लगाना चाहता हूँ.

जब पेंगुइन अपने घोंसले में होते हैं
तभी उन्हें पकड़ना सबसे आसान होता है.

घोंसला उनका घर होता है
और वो उसे छोड़ना नहीं चाहते हैं.

पेंगुइन को सबसे अच्छे तरीके से पकड़ने के लिए
आप उसे गर्दन से पकड़ें और उसके सिर को
अपने घुटनों के बीच रखें.

पेंगुइन अपने फ्लिपर्स से आपके पैरों को बहुत
जोर से मारेगा.

मैंने उसके फ्लिपर पर एक धातु का छल्ला लगा दिया.

उस छल्ले पर एक नंबर लिखा है.

छल्ला पेंगुइन को चोट नहीं पहुंचाता है.

नंबर मुझे अलग-अलग पेंगुइनों को
पहचानने में मदद करता है.

मैंने उनके पत्थरों के ढेर के पास डंडे भी गाढ़े हैं.

घोंसलों के भी नंबर हैं.

अब मैं बता सकता हूं कि कौन कहां रहता है.

जब मैं किसी पेंगुइन को छोड़ता हूँ.

तो वो वापस अपने घोंसले में चला जाता है.

फिर मैं पेंगुइनों को देखने के लिए बैठता हूँ.

मैं उनके "नंबर"को पढ़ने के लिए दूरबीन का
उपयोग करता हूं.

पेंगुइन जो भी करते हैं, मैं वो सब कुछ लिखता हूं.

"रूकरी" में आने वाले पहले एडेली पेंगुइन नर-पेंगुइन हैं.

लगता है कि नर पेंगुइन अपने घोंसलों की सबसे ज्यादा परवाह करते हैं.

उन्हें अपने लिए, अपने साथी और अपने छोटे पेंगुइनों के लिए एक घोंसला चाहिए.

अगर कोई उसके घोंसले को छीनने की कोशिश करे, तो वो पूरे दम से लड़ेगा. और वो लगभग हमेशा जीतेगा भी.

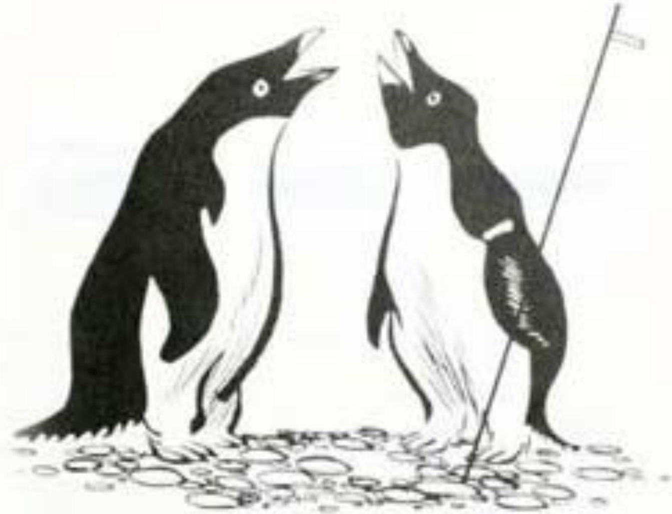

मादा पेंगुइन कुछ दिनों बाद आती हैं.

जब नर और मादा घोंसले में मिलते हैं तो वे जोर से आवाजें करते हैं.

वो आवाज़ एक खड़खड़ाहट जैसी होती है.

नर और मादा एक साथ सिर हिलाते हैं.

फिर वे अपना घोंसला बनाने के लिए पत्थर इकट्ठा करते हैं.

खोजकर्ता सोचते थे कि नर पेंगुइन,
मादाओं को पत्थर उपहार के रूप में देते होंगे.

पर यह सच नहीं है.

नर और मादा बारी-बारी से
पत्थर इकट्ठा करते हैं.

उनमें से एक हमेशा घोंसले में ही रहता है.

अगर घोंसले में कोई नहीं होगा तो
अन्य पेंगुइन उनके पत्थरों को चुरा लेंगे.

लड़ते समय पेंगुइन ज़ोर से
अपनी चोंच मारते हैं.

वे एक-दूसरे को अपने फ्लिपर्स से पीटते हैं.

एक दिन मादा एक अंडा देती है.

पेंगुइन चिल्लाते हैं आउघ! आउघ!

वे अपने सिर हिलाते हैं.

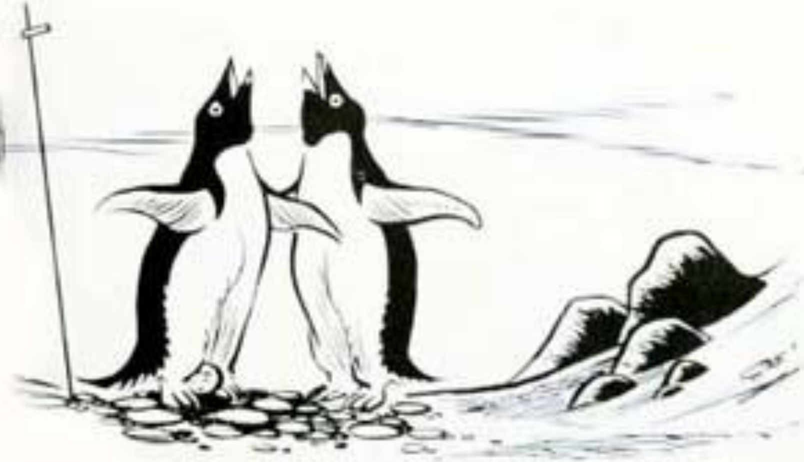

दो सप्ताह तक पेंगुइन अपना घोंसला बनाते हैं.

इस समय अंटार्कटिका में वसंत ऋतु है.

सूरज दिन और रात दोनों समय चमकता है.

पेंगुइन न खाते हैं और न सोते हैं.

नर और मादा पेंगुइन बारी-बारी से
अपने घोंसलों की रखवाली करते हैं.

वे एक-दूसरे के करीब खड़े होते हैं.

दो या तीन दिन बाद,
मादा एक और अंडा देती है.

फिर से वे चिल्लाते हैं आउघ! आउघ!

फिर नर पेंगुइन अंडे को गर्म रखने
के लिए घोंसले में चढ़ता है.

पेंगुइन के शरीर पर बिना
पंख वाला एक स्थान होता है.

इसे इन्क्यूबेशन-पैच कहते हैं.

वो भाग गर्म होता है.

वो अंडे को गर्म रखता है.

मादा को दो अंडे देने के बाद भूखी लगती है.

उसने दो सप्ताह से कुछ नहीं खाया है.

उसका एकमात्र भोजन समुद्र में है.

वो कुछ और पत्थर इकट्ठा करती है,
और नर उन्हें घोंसले में रखता है.

फिर मादा दूर स्थित बर्फ की चट्टान पर जाती है.

कई मादा पेंगुइन्स उस चट्टान के किनारे पर खड़ी हैं.

वे एक-दूसरे को धक्का देती हैं.

अचानक उनमें से एक पानी में कूद जाती है.

फिर दूसरे भी कूदते हैं.

चट्टान के नीचे खतरा है.

तेंदुआ-सीलँ समुद्र में उनका इंतजार कर रही हैं.

जब पेंगुइन कूदती हैं तो तेंदुआ-सीलँ उन्हें खा लेती हैं.

पर अधिकांश पेंगुइन भाग निकलने में सफल होती हैं.

वे उत्तर की ओर तैरती हैं.

वे समुद्र में छोटे झींगे (श्रिम्प) खाती हैं.

जल्द ही वे फिर से मोटी हो जाएंगी.

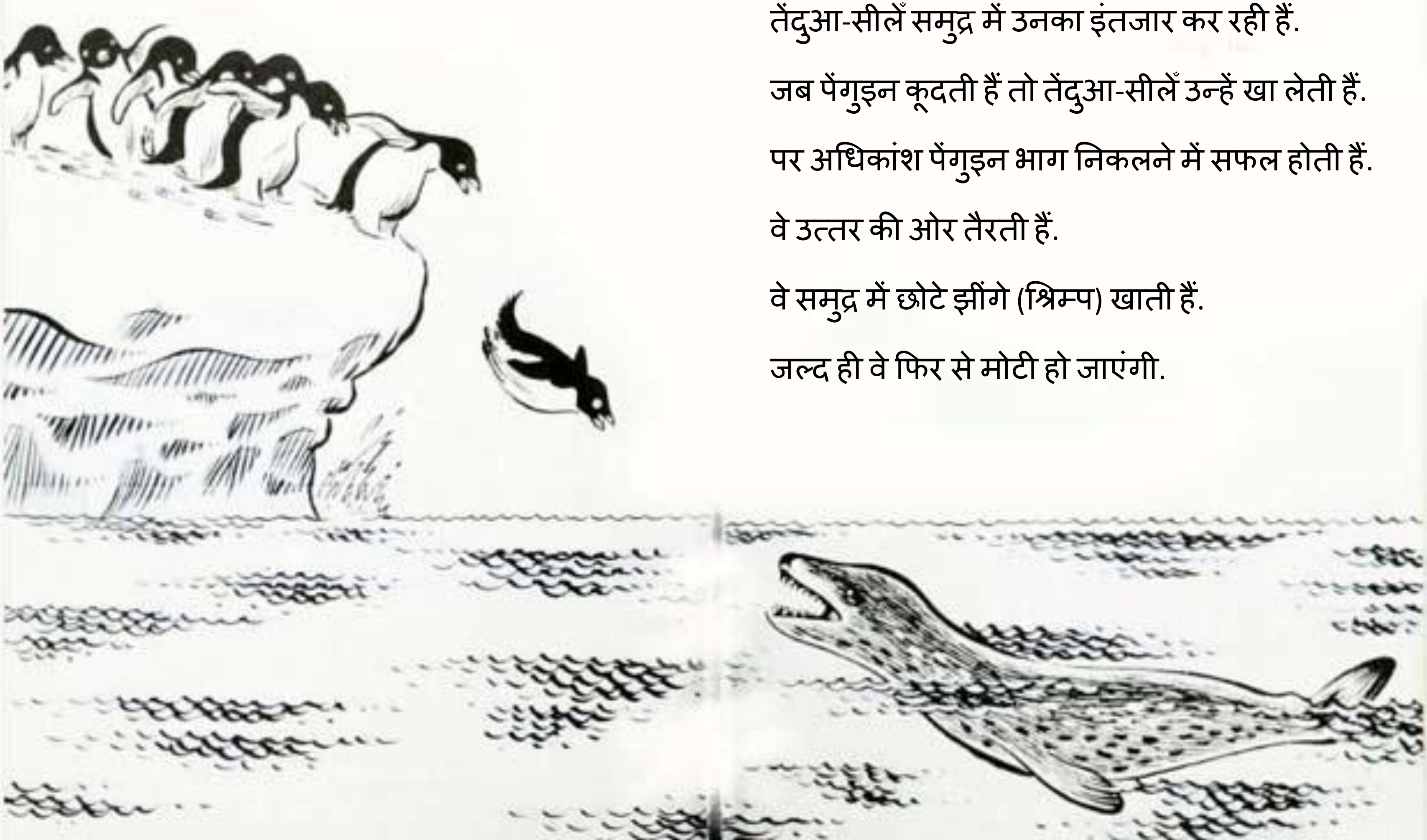

फिर वापस घोंसले पर.

अंडे को गर्म रखने के लिये नर पेंगुइन,
घोंसले पर बैठता है.

कभी-कभी तेज़ हवाएँ चलती हैं - एक सौ
मील प्रति घंटे की रफ़्तार से अधिक.

फिर भी नर बैठा रहता है—
तब वो लगभग बर्फ से ढका होता है.

दो सप्ताह बीत जाते हैं.

अंडे गर्म होते हैं.

घोंसले के पत्थर किसी ने नहीं चुराये हैं.

नर पेंगुइन अब पतला हो गया है.

उसने एक महीने से अधिक समय से कुछ
नहीं खाया है.

अभी तक वो अपने शरीर की चर्बी पर ज़िंदा है.

अंत में मादा पेंगुइन वापस आती हैं.

मैं उन्हें पानी के अंदर-बाहर आते-जाते देखता हूं.

वे ऊपर कूदती हैं.

वे पानी के नीचे तैरती हैं.

फिर वे हवा में सांस लेने के लिए
पानी के बाहर कूदती हैं.

अंत में वे बर्फ की चट्टान पर चढ़ जाती हैं.

वे आर्क-आर्क चिल्लाती हैं.

पेंगुइन अपने पंखों पर तेल लगाते हैं.

इससे पंख वाटरप्रूफ और चमकदार रहते हैं.

वो तेल, पूंछ के ऊपर एक विशेष स्थान से
आता है.

वे अपने चोंच से ग्रंथि को रगड़ते हैं.

फिर वे अपनी चोंच को अपने पंखों पर
रगड़ते हैं.

इसे "प्रीनिंग" कहते हैं.

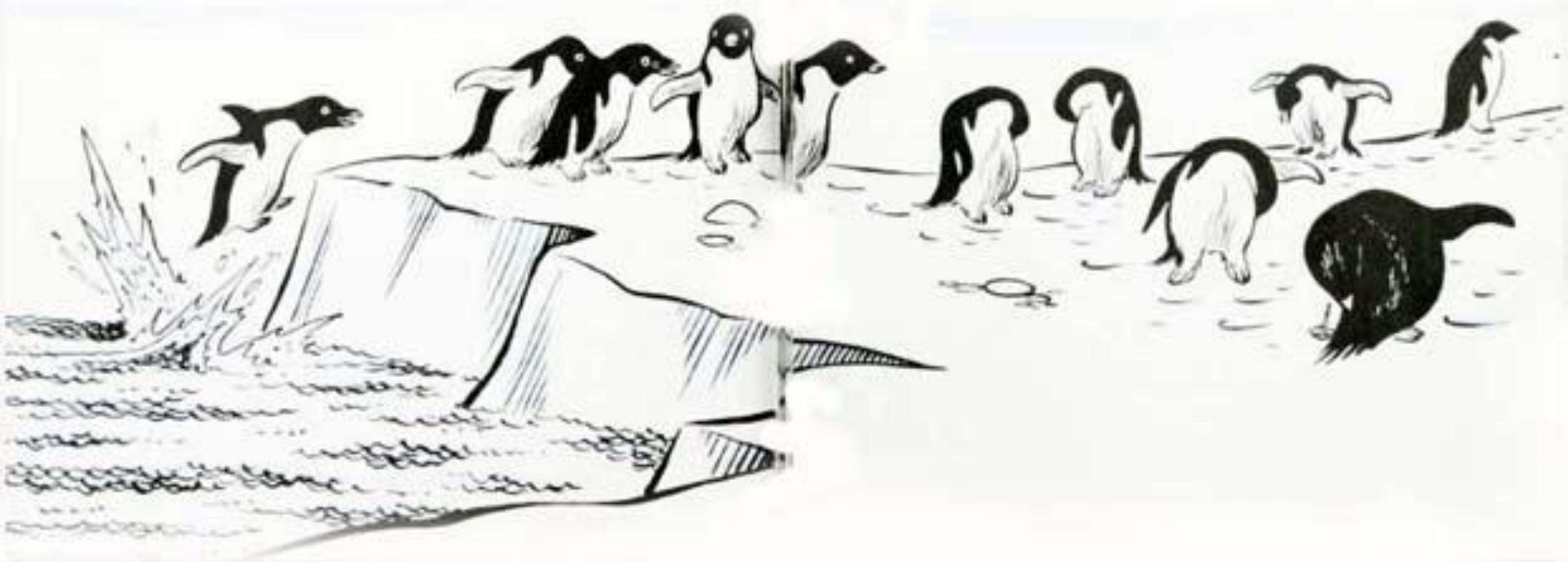

जब मादा अपने घोंसले के पास पहुँचती है,

तब वो अचानक दौड़ती है
और जोर से चिल्लाती है.

उसका साथी उत्तर देता है

उनकी आवाज़ें काफी कर्कश होती हैं.

उन सभी पेंगुइन का शोर इतना तेज होता है
कि वो एक मील दूर तक सुनाई देता है.

वे अपने सिर हिलाते हैं.

वे घोंसले और अपने अंडों को नमन करते हैं.

नर पेंगुइन धीरे-धीरे अपने पैर उठाता है
और घोंसले से दूर चला जाता है.

वो थका हुआ है और उसका शरीर जकड़ा
हुआ लगता है.

मादा जल्दी से अंडों को ढकती है.

अब नर समुद्र में जाकर भोजन कर सकता है.

वो घोंसले के लिए कुछ और पत्थर इकट्ठा करता है,

फिर वो मादा की ओर अपने सिर को हिलाता है.

नर पेंगुइन समुद्र तट पर इकट्ठे होते हैं.

उन्हें भी तेंदुए-सील के खतरे से बचना होगा.

पेंगुइन को नहाने और कई पाउंड झींगा (श्रिम्प)
खाने की ज़रूरत होगी.

पैंतीस दिनों तक पेंगुइन अंडों को गर्म रखते हैं.

फिर अंडे फूटते हैं.

प्रत्येक घोंसले में कुछ झाँकता है.

कोई अंडों में एक छोटा छेद करता है
और उसमें से बाहर निकलता है.

जब पेंगुइन चूज़े बाहर निकलते हैं,
तो वे रोयेंदार गेंदों की तरह दिखते हैं.

आप एक को अपने हाथ में पकड़ सकते हैं.

चूज़े खाना चाहते हैं.

पिता पेंगुइन समुद्र से वापिस आता है.

उसका पेट भोजन से भरा हुआ है.

चूजा झांकता है और भोजन के लिए
ऊपर पहुंचता है.

वह अपना छोटी सी चोंच अपने
पिता की चोंच से सटा देता है.

नर पेंगुइन अपने पेट से भोजन को
बलपूर्वक ऊपर उठाता है.

चूजा झट से उसे खा जाता है.

फिर चूजा सो जाता है.

फिर दूसरे अंडे से एक और चूजा निकलता है.

वो भी भूखा है.

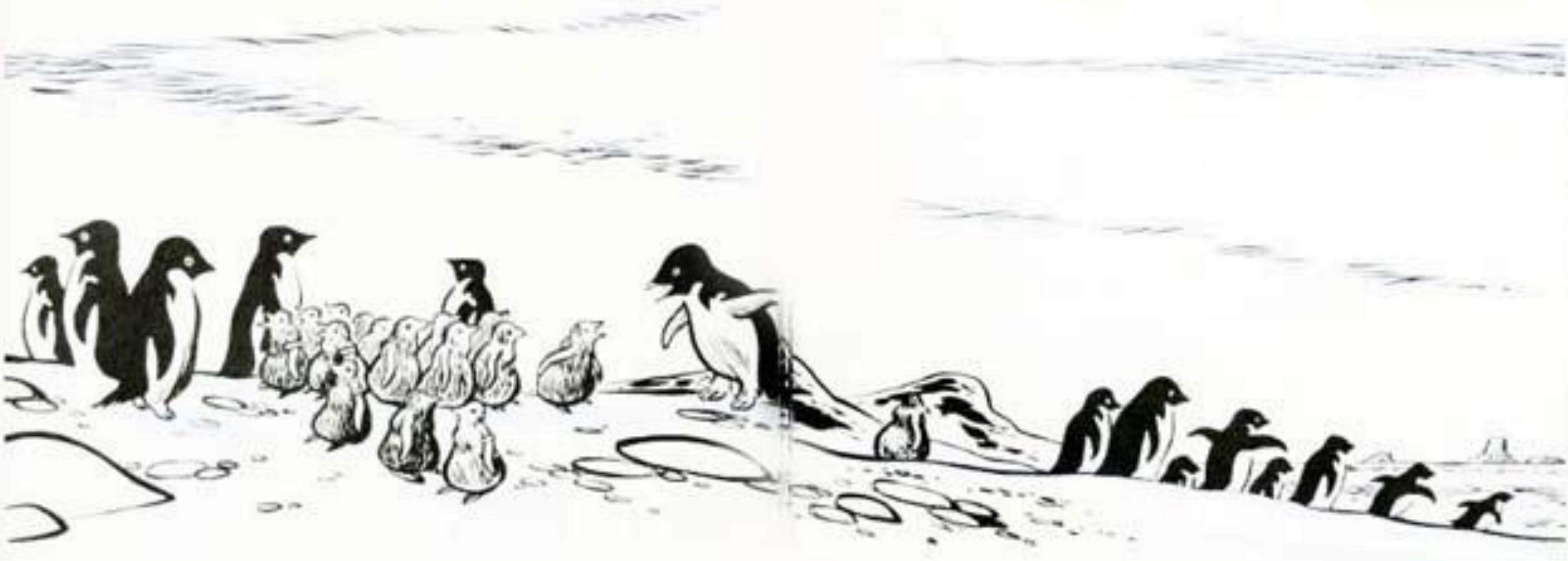

अब मादा दुबारा समुद्र में जाती है.

जब वो वापस आती है

तब उसका पेट भोजन से भरा होता है.

वो चूजों को गर्म रखने के लिए उन्हें ढकती है.

जब वे झाँकते हैं या भोजन माँगते हैं,
तो वो उन्हें खिलाती है.

जब चूजे तीन सप्ताह के हो जाते हैं

तब दोनों माता-पिता बार-बार भोजन
के लिए समुद्र में जाते हैं.

अब छोटे चूज़े अकेले हैं.

उनकी सुरक्षा के लिए कोई बड़ा पेंगुइन नहीं हैं.

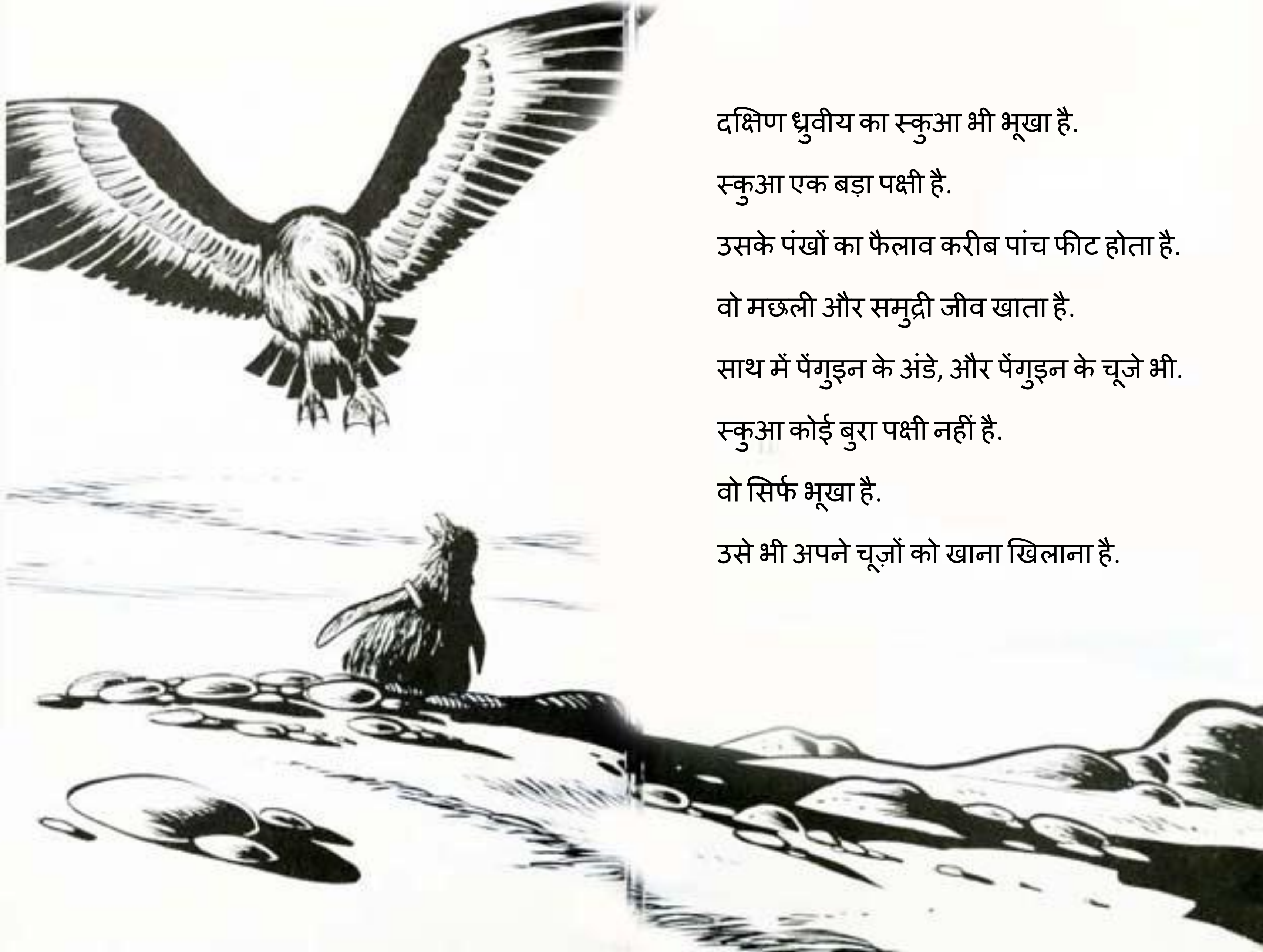

दक्षिण ध्रुवीय का स्कुआ भी भूखा है.

स्कुआ एक बड़ा पक्षी है.

उसके पंखों का फैलाव करीब पांच फीट होता है.

वो मछली और समुद्री जीव खाता है.

साथ में पेंगुइन के अंडे, और पेंगुइन के चूजे भी.

स्कुआ कोई बुरा पक्षी नहीं है.

वो सिर्फ भूखा है.

उसे भी अपने चूज़ों को खाना खिलाना है.

पेंगुइन चूजे "क्रेश" नामक क्लबों में इकट्ठा होते हैं.

जब वे एक साथ होते हैं तो चूजे सुरक्षित होते हैं.

और एक बड़े बंडल में होने से चूजे गर्म रहते हैं.

जब कोई माँ-पिता पेंगुइन वापस आता है
और आवाज़ करता है, तो दो रोयेंदार गेंदें
ऊपर कूदती हैं.

वे वापस अपने घोंसले में जाते हैं.

वहां उन्हें खाना खिलाया जाता है.

कभी-कभी अन्य चूजे भी उनके साथ जाते हैं.

लेकिन बड़े पेंगुइन केवल अपने ही चूजों को
खिलाते हैं.

मुझे यह पता है क्योंकि पैदा होने के बाद
मैंने चूजों पर भी नंबर के छल्ले लगाए थे.

मुझे पता है कि कौन से चूजे, किस माता-पिता के हैं.

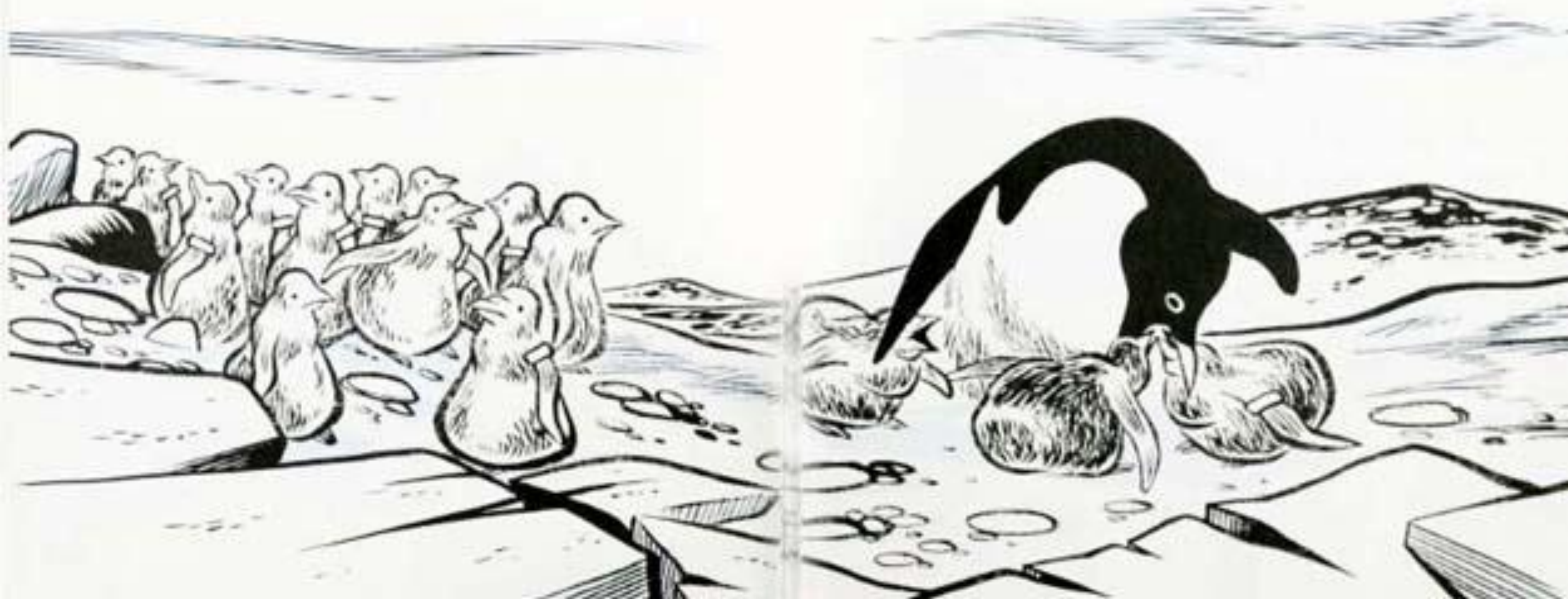

जब वे पांच सप्ताह के होते हैं,
तब चूजे बहुत मोटे हो जाते हैं.

उनका पेट जमीन पर लिथड़ता है.

वे दिन में अपने वजन जितना खा सकते हैं.

जब चूजे सात या आठ सप्ताह के हो जाते हैं,
तो बड़े पेंगुइन समुद्र में भोजन करने के लिए
चले जाते हैं.

फिर वे वापस नहीं आते हैं.

चूजे बिलकुल अकेले होते हैं.

सर्दी आने वाली है.

ठंड पड़ने लगती है
और बहुत तेज हवाएं चलती हैं.

चूजे अब क्या करेंगे?

उनका एकमात्र भोजन समुद्र में है.

चूजे नीचे समुद्र तटों पर जाते हैं.

जैसे ही वे दौड़ते हैं
उनके छोटे रोयेंदार पंख गिर जाते हैं.

वो चूजे कभी भूरे थे.

लेकिन अब वे बड़े पेंगुइनों की तरह ही
काले और सफेद हैं.

अपने माता-पिता की तरह,
वे भी अपने पंखों में तेल लगाते हैं.

वे तेल और अधिक तेल लगाते हैं.

वे अपने फ्लिपर्स को फड़फड़ाते हैं.

वे अब समुद्र में जाने को तैयार हैं.

समुद्र की लहरें बड़ी और भयावह होती हैं.

चूजे अब धीमी "आर्क" की आवाज़ करते हैं.

यह आवाज़ उनके जाने का संकेत है.

बर्फ का एक बड़ा टुकड़ा किनारे पर
तैरता हुआ आता है.

चूजे अचानक पानी में कूदते हैं
और उस बर्फ के टुकड़े की ओर तैरते हैं.

दुर्घटना! दुर्घटना!

लहरें उन्हें डुबाती हैं.

कुछ पीछे मुड़ जाते हैं.

कुछ चूजे बर्फ के टुकड़े पर चढ़ जाते हैं
और धीरे-धीरे समुद्र में तैर जाते हैं.

जल्द ही अन्य चूजे उनका पीछा करते हैं.

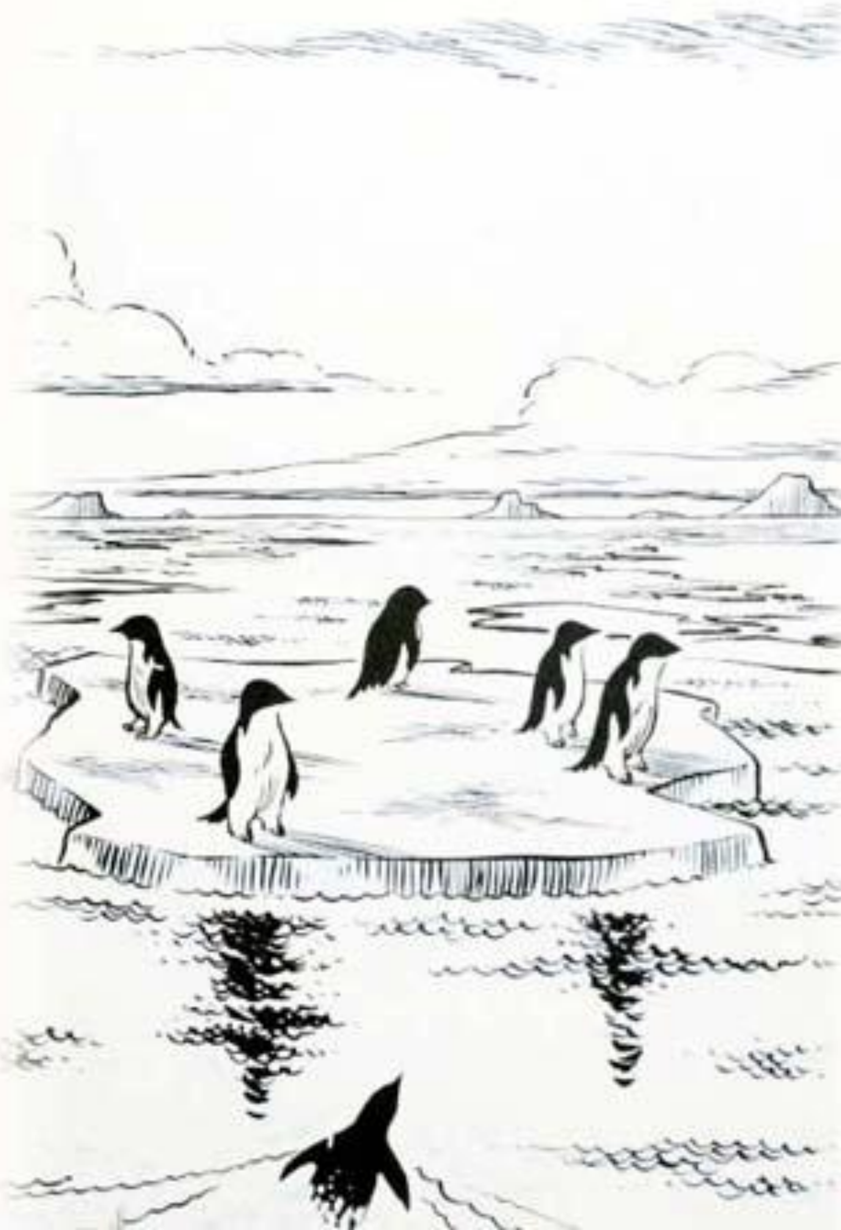

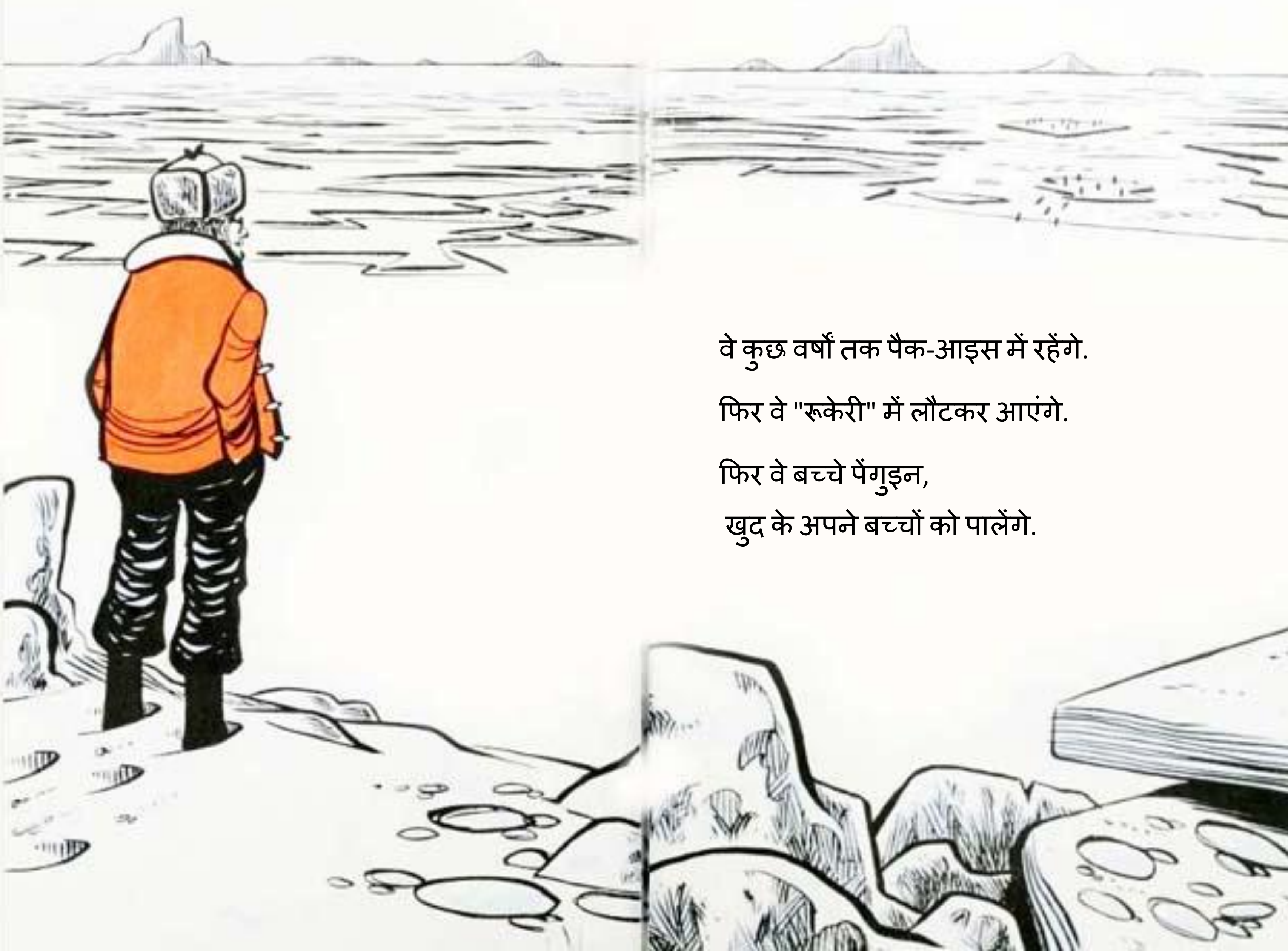

वे कुछ वर्षों तक पैक-आइस में रहेंगे.

फिर वे "रूकेरी" में लौटकर आएंगे.

फिर वे बच्चे पेंगुइन,
खुद के अपने बच्चों को पालेंगे.

मैंने अगले वसंत का और पेंगुइन्स की वापसी के लिए सात महीने इंतजार किया.

मैं जानना चाहता था कि क्या छल्ले वाले सैकड़ों पेंगुइन उसी "रूकेरी" में वापस आएंगे.

क्या उनके वही घोंसले, वही साथी और वही पड़ोसी होंगे?

देखो, उनका एक समूह आ रहा है!

मैं दूरबीन में से देख सकता हूँ
कि क्या कुछ में छल्ले लगे हैं.

इस बार भी सबसे पहले नर पेंगुइन आते हैं.

मैं चट्टानों और स्नो के टीलों के पीछे छिप जाता हूं
और देखता हूं कि छल्ले वाले पेंगुइन कहां जाते हैं.

गजब!

नर उसी स्थान पर लौटते हैं
जहां उन्होंने एक साल पहले घोंसले बनाए थे.

मैं अपने नक्शे और नोटबुक से उनकी जांच करता हूं.

जब वे अपने पुराने घोंसले के स्थानों पर
पहुँचते हैं तो नर उत्तेजित हो जाते हैं.

वे अपने इलाके के पास खड़े
अन्य नर पेंगुइन्स से लड़ते हैं.

वे शोर भी करते हैं!

वे वापस आकर खुश लग रहे हैं.

कुछ ही दिनों में मादा बर्फीले तट पर उतरेंगी.

वे भी दौड़कर अपने पुराने घोंसले के स्थान पर
जाएँगी और अपने नरों का अभिवादन करेंगी.

वे जोर से चिल्लायेंगी "आह“.

और फिर, एक-एक करके, नर और मादा पेंगुइन
अपने घोंसलों का पुनर्निर्माण शुरू करेंगे.

डॉ. आर एल पेनी

एडेली पेंगुइन का अध्ययन करने के लिए डॉ. पेनी ने अंटार्कटिका की पांच यात्राएं की हैं. उन्होंने वहां पर इकतालीस महीने बिताए हैं.

वो ब्रोंक्स चिड़ियाघर में न्यूयॉर्क जूलॉजिकल सोसाइटी की एक प्रयोगशाला में, एडेली पेंगुइन का अध्ययन करते हैं. वो पेंगुइन की गतिविधियों और उनकी आवाज़ों का अर्थ और पेंगुइन एक स्थान से दूसरे स्थान तक कैसे जाती हैं उसकी खोज में लगे हैं.

वो अंटार्कटिका की एक और यात्रा की योजना बना रहे हैं. इस बार वो पानी में एक पनडुब्बी की मदद से एडेली पेंगुइन का अध्ययन करने की सोच रहे हैं.

समाप्त